Roll No. .....

33

No of Printed Pages : 4

B.A. (Pt I)
2007 - I

Hindi Lit.- I

B.A. (Part I) EXAMINATION, 2022

(Faculty of Arts)

[Also Common with subsidiary Paper of B.A. (Hons.) Part I]

(Three-Year Scheme of 10+2+3 Pattern)

HINDI LITERATURE

FIRST PAPER

(आदिकाल एवं भक्तिकाल)

Time Allowed: 1½ Hours

Maximum Marks: 100 **Minimum Marks: 36**

(1) No supplementary answer-book will be given to any candidate. Hence the candidates should write the answer precisely in the Main answer-book only.
किसी भी परीक्षार्थी को पूरक उत्तर–पुस्तिका नहीं दी जायेगी। अतः परीक्षार्थियों को चाहिये कि वे मुख्य उत्तर–पुस्तिका में ही समस्त प्रश्नों का उत्तर लिखें।

(2) All the parts of one question should be answered at the one place in the answer-book. One complete question should not be answered at different places in the answer book.
किसी भी एक प्रश्न के अंन्तर्गत पूछे गये विभिन्न प्रश्नों के उत्तर–पुस्तिका में अलग–अलग स्थानों पर हल करने के बजाय एक ही स्थान पर हल करें।

किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर दीजिये।
सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

https://www.msbuonline.com

1. निम्न अवतरणों में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(i) अब मोहि राम भरोसा तेरा
जाके राम सरीखा साहिब भाई सो क्यूँ अनत पुकार न जाई।
जा सिर तीनि लोक कौ भारा, सो क्यूँ न करै जन को प्रतिपारा।।
कहै कबीर सेवौ बनवारी, सींची पेड़ पीवै सब डारी।

(ii) मन रे जागत रहिये भाई।
गालिफ होइ बसत मति खौवे, चोर मुसै घर जाई।।
षटचक्र की कनक कोठड़ी, बस्त भाव है सोई।
ताला कूँचो कुलफ के लागे, उघड़त बार न होई।
पथ पहरवा सोई गये हैं, बसतै जागण लागी।
करत विचार मन ही मन उपजी, ना कहीं गया न आया।।
कहै कबीर संसा सब छूटा राम रतन धन पाया।।

(iii) फिरि फिरि रोव कोई नहीं डोला। आधी रात बिहंगम बोला।।
तू फिरि फिरि दाहै सब पाखी। केहि दुख रैनि न लावसि आँखी।।
नागमती कारन कै रोई। का सोवै जो कंत बिछोई।।
मनचित हुँते न उतरै मोरे। नैन क जल चुकि रहा न मोरे।।
कोइ न जाइओहि सिंघलदीपा। जेहि सेवाति कहँ नैना सीपा।।
जोगी होइ निसरा सो नाहू। तब हुँत कहा संदेश न काहू।।
निति पूछौं सब जोगी जंगम। कोइ न कहै निज बात बिहंगम।।
चारिउ चक्र उजार भए, कोइ न संदेसा टेक।
कहौं बिरह दुख आपन, बैठि सुनहु दंड एक।।

(iv) रतनसेन बन करत अहेरा। किन्ह ओही तरिवर तर फेरा।
सीतल बिरिछ समुद के तीरा। अति उतंग औ छाँह गँभीरा।
तुरय बाँधि कै बैठ अकेला। साथी और करहिं सब खेला।।
देखत फिरै सो तरिवर साखा। लाग सुनै पंखिन्ह के भाखा।।
पंखिन महँ सो बिहंगम अहा। नागमती जासौं दुख कहा।।
पूछहिं सबै बिहंगम नामा। आहो मीत। काहे तुम सामा?।।
कहेसि मीत! मासक दुइ भए। जंबूदीप तहाँ हम गए।

https://www.msbuonline.com

नगर एक हम देखा, गढ़ चितउर ओहि नाँव।
सो दुख कहौं कहाँ लगि, हम दाढ़े तेहि ठाँव।।

(v) बरु वै कुब्जा भलो कियो।
सुनी सुनी समाचार ऊधो, मो कछुक सिरात हियो।।
जाके गुण, गति, नाम, रूप हरि, हारयो फिरि न दियो।
तिन अपनो मन हरत न जान्यो हँसि हँसि लोग जियो।।
सूर तनक चंदन चढ़ाय तन ब्रजपति बस्य कियो।।
और सकल नागरि नारिन को दासी दाँव लियो।।

(vi) निर्गुन कौन देस को बासी?
मधुकर! हाँसि समुझाय, सौंह दै बूझति साँच, न हाँसी।।
को है जनक, जननि को कहियत, कौन नारि, को दासी?
कैसो बरन, भेस है कैसो केहि रस कै अभिलाषी।।
पावैगो पुनि कियो आपनो जो रे। कहैगो गाँसी।
सुनत मौन है रह्यो ठग्यो सो सूर सबैमति नासी।।

(vii) देव।
और काहि माँगिए, को माँगिबो निवारे?
अभिमतदातार कौन दुख-दरिद्र दारे।।
धरम धाम राम काम-कौटि-रूप रूरो।
साहब सब विधि सुजान, दान-खड़ग-सूरो।।
सुसमय दिन द्वै निसान, सबके द्वार बाजै।
कुसमय दसरथ के दानि तैं गरीब निवाजै।
सेवा बिनु गुनबिहिन दीनता सुनाऐ।
जे जे तैं निहाल किए फूले फिरत पाये।।
तुलसीदास जाचक रुचि जानि दान दीजै।
रामचन्द्र चन्द्र तू, चकोर मौहि कीजै।।

(viii) मन! माधव को नेकु निहारहि।
सुन सठ, सदा रंक के धन ज्यों, छिन-छिन प्रभुहिं सँभारहि।।
सोभा-सील-ग्यान-गुन-मन्दिर, सुन्दर परम उदारहिं।

P.T.O.

https://www.msbuonline.com

रंजन संत, अखिल-अघ-गंजन, भंजन विषय-बिकारहि।।
जो बिनु जोग, जग्य व्रत, संयम गयो चहै भव-पारहि।
तौ जनि तुलसीदास निसि बासर हरिपद-कमल बिसारहि।।

2. कबीर के काव्य में संवेदना और शिल्प पर प्रकाश डालिए।
3. भक्तिकाल की ज्ञानमार्गी काव्यधारा का उल्लेख करते हुए कबीर काव्य की प्रासंगिकता सिद्ध कीजिए।
4. जायसी के काव्य में प्रेम और वियोग श्रृंगार को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
5. सूफी काव्य परम्परा में जायसी के योगदान का वर्णन कीजिए।
6. सूरदास की भक्ति भावना पर एक लेख लिखिए।
7. सूरदास कृत भ्रमरगीत सार की काव्यगत विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
8. तुलसी के काव्य के भाव पक्ष और कला पक्ष का सोदाहरण विवेचन कीजिए।
9. 'विनयपत्रिका' भक्तों के कण्ठों का हार है।' इस कथन का सोदाहरण विश्लेषण कीजिए।

*****

https://www.msbuonline.com
Whatsapp @ 9300930012
Send your old paper & get 10/-
अपने पुराने पेपर्स भेजे और 10 रुपये पायें,
Paytm or Google Pay से

https://www.msbuonline.com